चाँदीपुरा वायरस

चर्चा में क्यों?

मध्य प्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री के अनुसार, राज्य में **चाँदीपुरा वायरस** का कोई मामला सामने नहीं आया है।

- इससे पहले, केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय और विशिषज्ञों ने गुजरात, राजस्थान तथा मध्य प्रदेश में वायरल संक्रमण एवं **एक्यूट इंसेफेलाइटिस सिंड्रोम** **(Acute Encephalitis Syndrome- AES)** के मामलों की समीक्षा की।

मुख्य बिंदु

- सूत्रों के अनुसार, मध्य प्रदेश स्वास्थ्य विभाग के पास इस **वायरस की पहचान करने के लिये सभी आवश्यक उपकरण और सुविधाएँ उपस्थित हैं,** जो AES के कारणों में से एक है।
- **एक्यूट इंसेफेलाइटिस सिंड्रोम (AES) चिकित्सकीय रूप से समान तंत्रिका संबंधी अभिव्यक्तियों का एक समूह है,** जो कई अलग-अलग **वायरस**, **बैक्टीरिया**, **कवक**, **परजीवी**, **स्पाइरोकेट्स, रसायनों/विषाक्त पदार्थों आदि** के कारण होता है।
- AES के ज्ञात वायरल कारणों में **जापानी इंसेफेलाइटिस वायरस (JEV)**, **डेंगू**, हर्पीज सिम्प्लेक्स वायरस और **वेस्ट नाइल** आदि शामिल हैं।

चाँदीपुरा वायरस (CHPV)

- यह **रैबडोविरिडे फैमिली** का सदस्य है, जो देश के पश्चिमी, मध्य और दक्षिणी भागों में, विशेष रूप से मानसून के मौसम के दौरान, **छोटे स्तर के मामलों तथा प्रकोप** का कारण बनता है।
  - यह बीमारी रेत **मक्खियों और टिक्स जैसे वेक्टरों द्वारा संक्रमित** होती है। यह ध्यान देने योग्य बात है कि वेक्टर नियंत्रण, स्वच्छता और जागरूकता ही इस बीमारी के विरुद्ध उपलब्ध एकमात्र उपाय है।
- वायरस के कारण होने वाला संक्रमण **केंद्रीय तंत्रिका तंत्र** तक पहुँच सकता है, जिससे **एन्सेफलाइटिस (Encephalitis)** हो सकता है- मस्तिष्क के ऊतकों में सूजन।
- **रोग की प्रगति इतनी तीव्र हो सकती है** कि रोगी को सुबह तीव्र बुखार हो सकता है तथा शाम तक गुर्दे या यकृत प्रभावित हो सकते हैं।
- यह संक्रमण मुख्यतः **15 वर्ष से कम उम्र के बच्चों** तक ही सीमित रहा है।
- **लक्षण:**
  - CHPV संक्रमण में शुरू में फ्लू जैसे लक्षण दिखाई देते हैं, जैसे- **तीव्र बुखार, शरीर में दर्द और सिरदर्द।**
  - इसके बाद **यह संवेदी अंगों में परिवर्तन या मिर्गी (एपिलेप्सी) और एन्सेफलाइटिस (दिमागी बुखार)** का रूप ले सकता है।
  - श्वसन संबंधी परेशानी, रक्तस्राव की प्रवृत्ति या **एनीमिया**
  - एन्सेफलाइटिस के बाद संक्रमण अक्सर तेज़ी से बढ़ता है, जिसके कारण अस्पताल में भर्ती होने के 24-48 घंटों के भीतर मृत्यु हो सकती है।
- **उपचार:**
  - इस संक्रमण का **प्रबंधन केवल लक्षणात्मक** रूप से ही किया जा सकता है, क्योंकि **वर्तमान में इसके उपचार के लिये कोई विशिष्ट एंटीरेट्रोवाइरल थेरेपी या टीका उपलब्ध नहीं है।**

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/chandipura-virus-1